थाने में एफ़आईआर दर्ज कराने के लिये सीपी तक गुहार लगानी पड़ती है

फ़रीदाबाद (म.मो.) दिनांक 28 अगस्त को डीएलएफ़ सेक्टर 11 ई ब्लॉक के ताला लगे मकान नम्बर 47 ए में चोर दीवार फ़ांदकर घुस गये। नवनिर्मित इस मकान में लगी तमाम पानी की टूटियां व अन्य फिटिंग इत्यादि उखाड़ कर ले गये। मकान मालिक शिव कुमार जोशी एडवोकेट इसकी लिखित शिकायत लेकर तुरंत स्थानीय पुलिस चौकी पहुंचे। पुलिस ने केस दर्ज करने की बजाय उनको इधर-उधर की बातों में उलझाते हुए कहा कि वकील साहब क्या छोटी-मोटी चोरी की रिपोर्ट दर्ज कराओगे? हम वैसे ही कोशिश करके चोरों को पकड़ लेंगे। वकील साहब ने स्पष्ट कहा कि उन्हें मालुम है जैसे चोर तुम पकड़ते हो, इसलिये कृपया चोरी की एफआईआर दर्ज कर लें। लेकिन उनके कान पर जूं तक नहीं रेंगी।

पुलिस की इस हरामखोरी की खबर प्रकाशित करवाने के लिये वकील साहब ने 16 सितम्बर को मज़दूर मोर्चा से सम्पर्क किया तो इस संवाददाता ने तुरंत चौकी इंचार्ज प्रदीप मोर को फ़ोन करके सच्चाई जाननी चाही।

सब इन्स्पेक्टर प्रदीप मोर ने बताया कि वकील साहब आये थे लेकिन वे एफ़आईआर दर्ज नहीं कराना चाहते हैं, केवल भविष्य में इस तरह की वारदातों पर नियंत्रण चाहते थे। पुलिस के इस झूठ को तुरत भांपते हुए इस संवाददाता ने कहा कि वकील साहब की एफ़आईआर तुरंत दर्ज की जाए, बाकि वारदातों पर आप जैसा नियंत्रण करेंगे उसे सब जानते हैं। लेकिन इस बात का कोई असर चौकी इंचार्ज पर नहीं हुआ। अंततः वकील साहब ने पहले थाना सेक्टर सात में व बाद में सीपी साहब को 3 सितम्बर को वाट्सऐप्प किया, फ़िर 19 सितम्बर को ईमेल किया कोई असर नहीं हुआ तो दो अक्टूबर को पुनः वाटसऐप्प किया। तब कहीं जाकर इस महकमे में हलचल हुई और 20 तारीख को एसएचओ थाना सेक्टर 7 ने वकील साहब को सूचित किया कि उनकी एफ़आईआर दर्ज कर ली गई है।

एफआईआर दर्ज करके कितना बड़ा एहसान किया है पुलिस ने, वकील साहब कैसे उतारेंगे इसको?

गौरतलब है कि यह मामला तो एक पढे-लिखे वकील का है, आम आदमी के साथ यह पुलिस क्या नहीं करती होगी? वकील साहब ने इस संवाददाता को बताया कि इस तरह की वारदात यहां कोई अकेली नहीं है, आये दिन ऐसी वारदातें होती रहती हैं। वकील साहब ने जब पड़ोसियों से पुलिस रिपोर्ट करने की बात कही तो सभी लोगों का यह कहना था कि उन्होंने पुलिस चौकी में जाकर खूब अच्छी तरह देख रखा है। वहां जाकर जलील होने से तो अच्छा है कि अपना नुक्सान चुपचाप भुगत लिया जाये।

वकील साहब का यह मामला सामने आने के बावजूद भी उच्चाधिकारियों ने चौकी इंचार्ज के विरुद्ध खबर लिखे जाने तक कोई कार्यवाही नहीं की थी। विदित है कि पुलिस में 'बरकिंग' यानी रिपोर्ट दर्ज न करना एक बड़ा गुनाह माना जाता है, जिसके लिये सम्बन्धित अधिकारी को बर्खास्त तक किया जा सकता है। लेकिन यहां तो किसी ने उस अधिकारी का तबादला तक करने की जरूरत महसूस नहीं की।

आम चर्चा यह है कि चौकी व थाना इंचार्ज राजनीतिक एवं अन्य दबावों में तैनात किये जाते हैं। इसलिये वे बेखौफ़ होकर जनता को लूटने के अलावा दूसरा कोई काम नहीं करते।

अनीता यादव ने फ़ोन कर पूछा कि उनकी फ़ोटो और खबर कैसे लगा दी?

सतीश कुमार, सम्पादक मजदूर मोर्चा

गतांक में 'फ़ोगाट स्कूल में एचपीएससी परीक्षा केन्द्र बनने के पीछे हैं उसके वीआईपी अभ्यार्थी' शीर्षक से प्रकाशित समाचार से उद्वेलित अनीता यादव आईएएस ने मुझे दो अक्टूबर शाम चार बजे फ़ोन कर पूछा कि 'मज़दूर मोर्चा' अखबार आप ही छापते हैं? मैने पूछा कि आप कौन बोल रही हो तो उन्होंने कहा कि मैं अनीता यादव बोल रही हूं। मेरे हां कहने पर उन्होंने कुछ ऊंचे स्वर में कहा कि मेरी फ़ोटो व खबर कैसे छाप दी? तो मैंने भी उसी स्वर में जवाब दिया कि फ़ोटो व खबर किसी से पूछ कर नहीं छापी जाती। इस पर उनका स्वर ठीक धुन में आ गया वे बोली कि आपने सेटिंग का आरोप कैसे लगा दिया? उनकी बात को बीच में ही काटते हुए मैने पूछा कि 'सेटिंग?' इस पर उन्होंने बात को थोड़ा घुमाते हुए कहा कि खबर का अर्थ तो यही निकलता है कि सेटिंग से यह सेंटर बनवाया गया है।

फिर स्वतः बोली कि वे तो खुद पीड़ित पक्ष हैं। वे खुद वहां गई थी और देखा कि कितनी कीचड़ भरी गलियों से बच्चों को गुजरना पड़ रहा था। उनके देखते-देखते तीन-चार बच्चे कीचड़ में फ़िसल कर गिर गये, कीचड़ सने हालत में उन्होंने भला कैसे पेपर दिया होगा? मैंने इसके लिये डीसी को डांटा, मैने पूछा कि 'डीसी को डांटा?' इस पर उन्होंने कहा हां, डीसी को डांटा कि ऐसी गंदी जगह उन्होंने कैसे सेंटर बनवा दिया? उनका जवाब सुनकर

फ़िर एडीसी से पूछा कि ऐसे जगह सेंटर कैसे बनवा दिया, क्या आप लोग सेंटर को देखते नहीं हो, केवल पैसे लेकर सेंटर बनवा देते हो?

जवाब में अनीता यादव को बताया गया कि ये सेंटर बनाने का काम तो डीईओ का होता है। कोई ऋतु चौधरी ने ये सेंटर बनाये थे। मैंने बीच में टोकते हुए कहा कि डीईओ कहती हैं कि ये तमाम सेंटर तो उनसे पहले वाली डीईओ सतिन्द्र कौर वर्मा बना गई थी। इसको अनसुना करते हुए अनीता यादव ने कहा कि उन्होंने तुरंत एचपीएससी के सेक्रेटरी व एक पूर्व सदस्य को फ़ोन लगा कर पूछा कि आप लोग सेंटर बनाने से पहले कुछ देखते भी हो या पैसे लेकर सेंटर बना देते हो? उन्होंने पुनः दोहराते हुए कहा कि उन्होंने जितेन्द्र व सतबीर मान को भी कहा कि सेंटर बनाने से पहले जांचना चाहिये।

अपनी बच्चियों की तारीफ़ करते हुए अनीता यादव ने कहा कि वे बहुत होशियार हैं। भगवान की कृपा से उन्हें किसी सेटिंग की आवश्यकता नहीं है। वे जहां भी जायेंगी नम्बर वन ही रहेंगी। मुझे ताकीद करते हुए कहा कि अपनी पॉपुलरिटी के लिये उनके नाम का इस्तेमाल न किया करें। जाहिर है कि इससे उनका अभिप्राय 'मज़दूर मोर्चा' उनका नाम छापकर अपनी पॉपुलरिटी बढ़ा रहा है। हकीकत शायद इससे उलट ही है। मोर्चा खुद ही काफ़ी पॉपुलर है, इसके लिये इसे किसी अनीता यादव की जरूरत नहीं है। वैसे अच्छा लगा वर्षों बाद किसी आईएएस कर्मचारी ने मजदूर मोर्चा प्रकाशन का इस तरह से संज्ञान लिया। बीसियों साल पहले तत्कालीन उपायुक्त रामनिवास तथा एसएस प्रसाद ने भी कुछ ऐसा ही संज्ञान लिया था और मुंह की खायी थी।

एक्सियन पद पर तैनाती की कीमत 50 लाख?

फ़रीदाबाद (म.मो.) बीते सप्ताह कुछ खोज-खबर के लिये यह संवाददाता एक्सियन पीडब्लयूडी कार्यालय पहुंचा तो वहां बड़ी अविश्वसनीय सी बातें सुनने को मिली। इस परिसर में एक्सियन के अलावा चार एसडीओ भी बैठते हैं। अन्य महकमाना बातों के बीच जिक्र आया कि यहां एक्सियन पद पर तैनाती पाने के लिये सम्बन्धित मंत्री दुष्यंत चौटाला को 50 लाख की भेंट पूजा करनी होती है। इस पूजा के बल पर केवल एक साल की तैनाती मिलती है। चर्चा यह चल रही थी कि एक्सियन प्रदीप सिंधु को अब एक साल से ऊपर 10 दिन हो चुके हैं, तबादला आदेश आने वाले होंगे।

इससे पहले वाले एक्सियन राहुल सिंह भी पुनः अपनी पुरानी सीट पर आने को प्रयासरत हैं। पूर्व मंत्री करन दलाल के भाई प्रेम के दामाद राहुल शायद इतनी बड़ी रकम देने से हिचकिचा रहे हैं। हिचकिचाना बनता भी है, क्या भरोसा इतनी बड़ी रकम खर्च करने के बावजूद भी एक साल पूरा हो या न हो। इन धंधों में कोई गारंटी या लिखत-पढ़त तो होती नहीं है, सब जबानी जमा खर्च होता है।

यदि यह सच्चाई है तो बहुत ही भयानक है। जब एक एक्सियन इतनी बड़ी रकम देकर तैनाती पायेगा तो इससे कई गुना वसूली भी तो करेगा ही। जब एक्सियन की तैनाती इस तरह से होगी तो एसडीओ, जेई व अन्य कर्मचारी भी तो कुछ न कुछ देकर ही यहां तैनाती पाते होंगे। जाहिर है कि तैनाती के लिये दिये गये पैसे की भरपाई तो उन सार्वजनिक कामों से ही होगी जो यह विभाग ठेकेदारों से कराता है। सुधी पाठक अब आसानी से समझ सकेंगे कि ये सड़कें, पुल व इमारतें समय से पहले ही भुरभुरा कर क्यों गिर जाती हैं?

खाकी लठैतों से खट्टर...

पेज एक का शेष

आतंकित करने के लिये उस दिन ड्रम बजाते हुए लाठियां लेकर शहरों में परेड निकालते हैं। आखिर ये सब संघी कब काम आयेंगे?

दरअसल ये संघी बहादुर केवल सत्ता की छाया में ही लाठी घुमा सकते हैं। पिछले दिनों जब सिंघू बार्डर पर इन्हें 'स्थानीय लोग' बनाकर किसानों को खदेड़ने भेजा था तो भारी संख्या में दिल्ली पुलिस इनको पूरा कवर दे रही थी। लेकिन उसके बावजूद भी जब किसानों ने दहाड़ मारी तो वहां न पुलिस टिकी और न ही वे तथाकथित 'स्थानीय लोग', तो इतने जंग बहादुर हैं ये चड्डीधारी संघी। लगता है कि शायद अपने बछड़ों के दांत पहले से ही जानने वाले खट्टर ने नये वालेंटियर पैदा करने की सोची है।

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें, कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ़ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें।

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. प्रिंट फोर्ट, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड।
2. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन
3. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे।
4. जितेन्द्र, बाटा सेंटर - 9971064207
5. राम खिलावन-बल्लभगढ़ बस स्टैंड के सामने 9891164794
6. मोती पाहुजा - मिनार गेट पलवल, 9255029919
7. सुरेन्द्र बघेल - बस अड्डा होडल - 9991742421

केवल पाठकों के दम पर चलने वाले इस अखबार को सहयोग देकर इसकी आवाज को बुलंद रखें।

मज़दूर मोर्चा- खाता संख्या-451102010004150
IFSC Code : UBIN0545112
Union Bank of India, Sector-7, Faridabad